

पाठ - प्रवेश

प्रतीक और धरोहर दो किस्म की हुआ करती हैं। एक वे जिन्हें देखकर या जिनके बारे में जानकर हमें अपने देश और समाज की प्राचीन उपलब्धियों का भान होता है और दूसरी वे जो हमें बताती हैं कि हमारे पूर्वजों से कब, क्या चूक हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप देश की कई पीढ़ियों को दारुण दुख और दमन झेलना पड़ा था।





देश और समाज की प्राचीन विरासत





A quarter-century after the fall of Saigon, the long, divisive struggle in Indochina still lingers in the American fabric



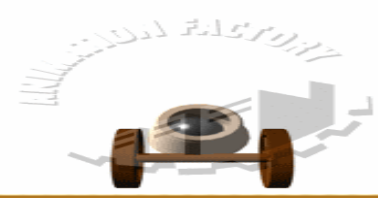
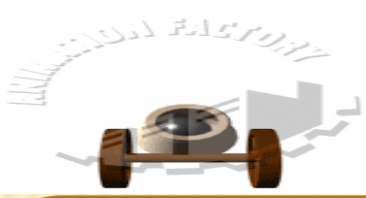
हमारे पूर्वजों से
हुई भूल - चूक



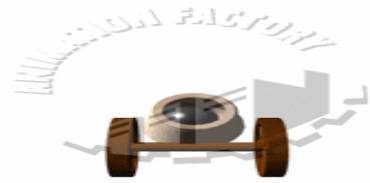
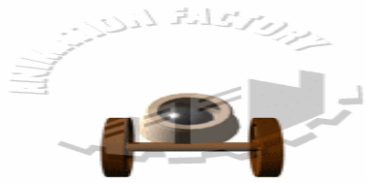
यह किस चीज का चित्र है ?



Edit with WPS Office

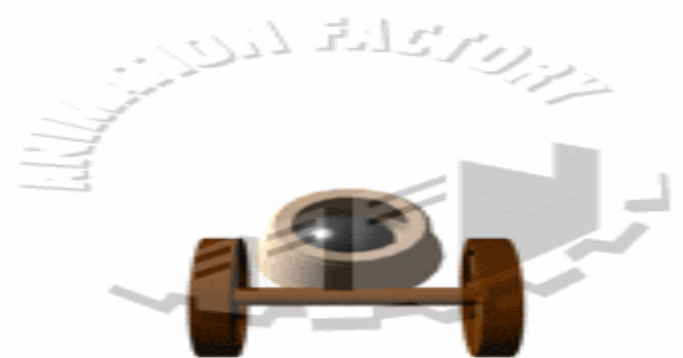


प्रस्तुत पाठ में ऐसे ही दो प्रतीकों का चित्रण है। पाठ हमें याद दिलाता है कि कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आई थी। भारत ने इसका स्वागत किया , लेकिन बाद में वह हमारी शासक बन बैठी। उसने कुछ बाग बनवाए तो कुछ तोपें भी तैयार कीं। उन तोपों ने इस देश को आजाद करने निकले जाँबाजों को मौत के घाट उतार दिया। पर एक दिन ऐसा भी आया जब हमारे पूर्वजों ने अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंका। तोप को निस्तेज कर दिया।

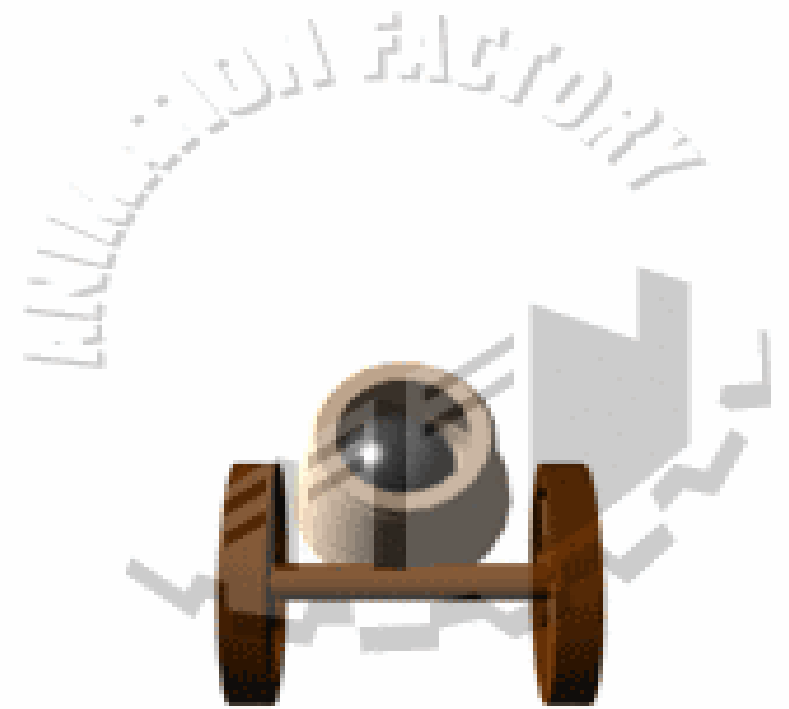


हमें इन प्रतीकों के माध्यम से यह याद रखना होगा कि भविष्य में कोई और ऐसी कंपनी यहाँ पाँव न जमाने पाए जिसके इरादे नेक न हों।

भले ही अंत में उनकी तोप भी उसी काम क्यों न आए जिस काम में इस पाठ की तोप आ रही है.....



तोप



वीरेन डंगवाल



Edit with WPS Office



तोप

कंपनी बाग के मुहाने पर
धर रखी गई है यह १८५७ की तोप
इसकी होती है बड़ी सम्हाल , विरासत में मिले
कंपनी बाग की तरह
साल में चमकाई जाती है दो बार।



Edit with WPS Office

सुबह शाम कंपनी बाग में आते हैं बहुत से सैलानी



Edit with WPS Office



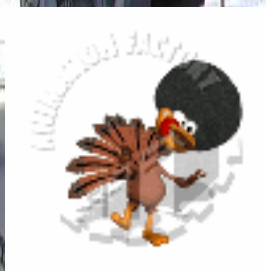
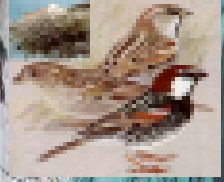
उन्हें बताती है यह तोप
कि मैं बड़ी ज़बर
उड़ा दिए थे मैंने
अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे
अपने ज़माने में



Edit with WPS Office



जब नहीं वो फिर बदला लेनेका मौका कब आयागा ?
तोपके बुझे धातुका जग देखके अंगरेजों काको धुलके जाँ।
अतिलाप लखेबाग मुयोग आरकथन आम्बिले ?
दामतदर बुधेमेन उजाय्या देठमा ईंखजदर शामन
अथाय कथा धुनिठ ल।



अब तो बहरहाल
छोटे लड़कों की घुड़सवारी से
अगर यह फ़ारिग हो
तो उसके ऊपर बैठकर
चिड़ियाँ ही अक्सर करती हैं गपशप
कभी – कभी शैतानी में वे
इसके भीतर भी घुस जाती हैं
खास कर गौरयें





वे बताती हैं कि दरअसल
कितनी भी बड़ी हो तोप
एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद

विरासत में मिली चीजें हमें अपने अतीत के बारे में जानकारी देती हैं। अतः हमें उन्हें सँभालकर रखना चाहिए।

संसार की कोई भी वस्तु कितनी ही शक्तिशाली क्यों न हो ; एक न एक दिन उसे नष्ट होना ही पड़ता है।



गृह - कार्य

- हमें अपने पूर्वजों से विरासत में कौन - कौन सी चीजें मिली हैं ; उसकी एक सूची बनाइए।
- तोपों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

